

नेकी बनी बदी

SEA

एक दिन की
बात है , दफ्तर
में...



अरे गरीब ! मेरी मेज़ साफ़
कर दो तो !



जी हुज़ूर !



दुर्भाग्य से, सफ़ाई करते समय, दवात उलट गई
और रोशनाई मेज़ पर फल गई !

अरे बेवकूफ़! देखकर
काम नहीं कर सकता है
क्या !!!

माफ़
कीजिये ।



बड़े बाबू आग - बबुले हो गए ! गरीब को
वह इतने दुर्वचन बोले कि उसके आँख में
आंसू आ गए ।

एक नंबर के बदतमीज
हो तुम ! ऐसा नालायक
और कामचोर तो मैंने
आज तक नहीं देखा ! ।



बेचारे गरीब की दशा ऐसी हो गई थी,
मानो उसने किसी की हत्या कर दी हो !

